ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS: पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, अंत्योदय, भारतीय राजनीतिक चिंतन, आर्थिक दृष्टि, समग्र विकास।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद : समकालीन भारत के परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्वेता — शोधकर्ता, देशभगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

डॉ सुभदीप कौर — सहायक प्राध्यापक, देशभगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

ABSTRACT

भारतीय राजनीतिक चिंतन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्थान एक मौलिक एवं दूरदर्शी विचारक के रूप में स्थापित है। उन्होंने स्वतंत्र भारत के समक्ष उपस्थित वैचारिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का समाधान भारतीय संस्कृति और दर्शन के आलोक में प्रस्तुत करते हुए "एकात्म मानववाद" का प्रतिपादन किया। यह दर्शन मनुष्य को केवल आर्थिक या राजनीतिक इकाई न मानकर उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक स्वरूप के समन्वित विकास पर बल देता है। उपाध्याय का मानना था कि पश्चिमी पूँजीवाद और साम्यवाद, दोनों ही मानव जीवन के समग्र स्वरूप को समझने में असफल रहे हैं। पूँजीवाद ने व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता को सर्वोच्च मानकर सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा दिया, जबकि साम्यवाद ने समानता के नाम पर व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सृजनशीलता को सीमित कर दिया। इसके विपरीत, एकात्म मानववाद भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। यह शोध-पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि, उसके मूल सिद्धांतों तथा समकालीन भारत में उसकी उपयोगिता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, आर्थिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण तथा मानव-केंद्रित विकास की व्यापक जीवन-दृष्टि है।

भूमिका:-

भारत का राजनीतिक एवं दार्शनिक चिंतन सदैव मानव जीवन के समग्र विकास पर आधारित रहा है। भारतीय परंपरा में व्यक्ति को केवल आर्थिक साधन या राजनीतिक इकाई नहीं माना गया, बल्कि उसे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित स्वरूप के रूप में देखा गया है। यही दृष्टि वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता तथा अन्य भारतीय दार्शनिक परंपराओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के समक्ष यह महत्वपूर्ण प्रश्न था कि राष्ट्र के विकास का आधार कौन-सी विचारधारा बने। उस समय विश्व में पूँजीवाद और साम्यवाद दो प्रमुख विचारधाराएँ प्रभावी थीं, किंतु भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ इन दोनों से भिन्न थीं।

ऐसे समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति एवं दर्शन पर आधारित एक वैकल्पिक चिंतन प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने **"एकात्म मानववाद"** नाम दिया। अप्रैल 1965 में मुंबई में दिए गए अपने चार ऐतिहासिक व्याख्यानों में उन्होंने इस विचारधारा का व्यवस्थित प्रतिपादन किया। उनका मत था कि भारत का विकास भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन-मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए, न कि किसी विदेशी विचारधारा की नकल पर।

उपाध्याय के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक सांस्कृतिक आत्मा होती है, जिसे उन्होंने **"चिति"** कहा। यही चिति राष्ट्र के चरित्र, जीवन-मूल्यों और विकास की दिशा का निर्धारण करती है। जब समाज अपनी चिति के अनुरूप कार्य करता है, तब उसकी संगठित शक्ति **"विराट"** के रूप में प्रकट होती है। इस प्रकार राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना से निर्मित एक जीवंत इकाई है।

एकात्म मानववाद का मूल सिद्धांत यह है कि व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण मानवता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। उपाध्याय ने इस विचार को भारतीय संस्कृति के "वसुधैव कुटुम्बकम्" तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्शों से जोड़ा। उनके अनुसार समाज में वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। इसी विचार को उन्होंने "अंत्योदय" के रूप में प्रतिपादित किया, जिसका अर्थ है—समाज के सबसे अंतिम, सबसे वंचित व्यक्ति का उत्थान।

आर्थिक दृष्टि से उपाध्याय ने विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, स्वदेशी, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा रोजगारपरक विकास का समर्थन किया। उनका मानना था कि अर्थव्यवस्था का उद्देश्य केवल उत्पादन और उपभोग बढ़ाना नहीं, बल्कि मानव कल्याण, सामाजिक न्याय तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा करना भी है। इसी प्रकार उन्होंने धर्म को किसी संप्रदाय विशेष से न जोड़कर जीवन को धारण करने वाले नैतिक सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया।

वर्तमान समय में जब विश्व उपभोक्तावाद, आर्थिक विषमता, पर्यावरणीय संकट, सांस्कृतिक विघटन तथा नैतिक मूल्यों के ह्रास जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय दृष्टि से एक संतुलित और मानवीय विकास मॉडल प्रस्तुत करता है। आत्मनिर्भर भारत, समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामोन्मुख विकास जैसे समकालीन विमर्शों में भी इस दर्शन की उपयोगिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इसी संदर्भ में यह शोध-पत्र एकात्म मानववाद के मूल सिद्धांतों, उसके दार्शनिक आधार तथा समकालीन भारत में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की मूल अवधारणा का अध्ययन करना।

१. एकात्म मानववाद के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आधारों का विश्लेषण करना।
२. पूँजीवाद एवं साम्यवाद के संदर्भ में एकात्म मानववाद की विशिष्टता को स्पष्ट करना।
३. समकालीन भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

साहित्य समीक्षा :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर अध्ययन किया है। उनके मूल व्याख्यानों का संकलन एकात्म मानववाद इस विषय का प्रमुख प्राथमिक स्रोत है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति पर आधारित वैकल्पिक विकास-दृष्टि का प्रतिपादन किया है। उपाध्याय ने स्पष्ट किया कि भारत का राष्ट्रीय पुनर्निर्माण भारतीय जीवन-दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप ही संभव है।

सी. पी. भिषीकर ने अपने अध्ययन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं विचारों का विश्लेषण करते हुए एकात्म मानववाद को भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक अभिव्यक्ति माना है। उनके अनुसार यह दर्शन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना तथा नैतिक मूल्यों को आधुनिक शासन व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास करता है। इसी प्रकार डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने अपने शोध में एकात्म मानववाद को भारतीय राजनीतिक चिंतन की मौलिक विचारधारा बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति और समाज के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के अनेक विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि एकात्म मानववाद पश्चिमी पूँजीवाद एवं साम्यवाद का केवल विरोध नहीं करता, बल्कि भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक सकारात्मक एवं व्यवहारिक विकल्प प्रस्तुत करता है। समकालीन शोधों में अंत्योदय, स्वदेशी, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, सामाजिक समरसता तथा आत्मनिर्भरता के संदर्भ में इस दर्शन की प्रासंगिकता पर विशेष बल दिया गया है।

शोध पद्धति :-

यह अध्ययन गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है।

प्राथमिक स्रोतों के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की मूल कृतियों—एकात्म मानववाद, राष्ट्र चिंतन, पॉलिटिकल डायरी तथा उनके संकलित भाषणों—का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में प्रकाशित शोध-पत्र, पुस्तकें, शोध-प्रबंध तथा भारतीय राजनीतिक चिंतन से संबंधित अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है। प्राप्त सामग्री का विषयवस्तु विश्लेषण एवं तुलनात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं।

एकात्म मानववाद का दार्शनिक आधार:-

एकात्म मानववाद भारतीय दर्शन की उस परंपरा का आधुनिक प्रतिपादन है, जिसमें जीवन को समग्र रूप में समझा गया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं से संचालित प्राणी नहीं है, बल्कि उसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक-चारों स्तरों पर विकास की क्षमता निहित होती है। यदि विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित रह जाए, तो वह अधूरा माना जाएगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मनुष्य के इन चार आयामों को समान महत्व देते हुए कहा कि समाज और राज्य की नीतियाँ ऐसी होनी चाहिएँ जो व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करें। उनके अनुसार मानव जीवन के चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—एक-दूसरे के पूरक हैं। अर्थ और काम का संचालन धर्म के द्वारा होना चाहिए, तभी समाज में संतुलन एवं नैतिकता बनी रह सकती है।

उन्होंने धर्म को किसी विशेष संप्रदाय या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं माना। उनके अनुसार धर्म वह नैतिक व्यवस्था है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को धारण करती है। यही कारण है कि उन्होंने धर्मराज्य की अवधारणा को थियोक्रेटिक (धर्मतांत्रिक) राज्य से अलग बताते हुए उसे न्याय, नैतिकता और उत्तरदायित्व पर आधारित शासन व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया।

चिति एवं विराट की अवधारणा :-

एकात्म मानववाद में "चिति" और "विराट" दो अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। उपाध्याय के अनुसार

प्रत्येक राष्ट्र की एक विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना होती है, जिसे उन्होंने "चिति" कहा। यही चिति राष्ट्र के आदर्शों, मूल्यों और जीवन-दृष्टि का निर्धारण करती है। यदि कोई राष्ट्र अपनी चिति से विमुख हो जाता है, तो उसकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक एकता कमजोर पड़ने लगती है।

"विराट" उस संगठित राष्ट्रीय शक्ति का प्रतीक है, जो चिति के आधार पर समाज में सक्रिय होती है। जब नागरिक अपने सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप संगठित होकर राष्ट्रहित में कार्य करते हैं, तब विराट का निर्माण होता है। इस प्रकार चिति राष्ट्र की आत्मा है, जबकि विराट उसकी कार्यशील शक्ति है।

पूँजीवाद एवं साम्यवाद का तुलनात्मक विश्लेषण :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों की आलोचना की। उनके अनुसार पूँजीवाद व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व देता है, जिसके परिणामस्वरूप पूँजी का केंद्रीकरण, आर्थिक असमानता और सामाजिक विषमता बढ़ती है। दूसरी ओर साम्यवाद समानता स्थापित करने के प्रयास में व्यक्ति की स्वतंत्रता, सृजनशीलता तथा व्यक्तिगत अधिकारों को सीमित कर देता है।

उपाध्याय का मत था कि इन दोनों विचारधाराओं में मनुष्य को केवल आर्थिक दृष्टि से देखा गया है। पूँजीवाद में मनुष्य उपभोक्ता बन जाता है, जबकि साम्यवाद में वह राज्य का साधन बनकर रह जाता है। दोनों ही विचारधाराएँ मनुष्य के आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक पक्षों की उपेक्षा करती हैं।

इसके विपरीत, एकात्म मानववाद मनुष्य को समग्र रूप में स्वीकार करता है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करता है। इसमें निजी पहल का सम्मान है, परंतु उसके साथ सामाजिक न्याय और नैतिक उत्तरदायित्व भी अनिवार्य माने गए हैं। यही कारण है कि यह दर्शन आर्थिक विकास को केवल उत्पादन और उपभोग से नहीं, बल्कि मानव कल्याण, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय हित से जोड़ता है।

उपाध्याय का यह भी मत था कि किसी भी आर्थिक व्यवस्था का अंतिम उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान होना चाहिए। यही विचार आगे चलकर "अंत्योदय" की अवधारणा का आधार बना। इस दृष्टि से एकात्म मानववाद भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एक संतुलित, मानवीय एवं सांस्कृतिक विकास मॉडल प्रस्तुत करता है।

समकालीन भारत में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता:-

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्वीकरण, तीव्र औद्योगिकीकरण, तकनीकी विकास तथा मुक्त बाज़ार व्यवस्था ने मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं, परन्तु इसके साथ-साथ आर्थिक विषमता, सांस्कृतिक विघटन, पर्यावरणीय संकट, नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा सामाजिक असंतुलन जैसी गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद केवल एक वैचारिक दर्शन नहीं, बल्कि मानव-केंद्रित एवं संतुलित विकास की एक व्यवहारिक अवधारणा के रूप में उभरता है।

उपाध्याय का स्पष्ट मत था कि विकास का वास्तविक उद्देश्य केवल राष्ट्रीय आय या उत्पादन में वृद्धि नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक न्याय की स्थापना तथा सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि आर्थिक प्रगति समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचती, तो वह विकास अधूरा है। यही विचार आगे चलकर "**अंत्योदय**" के रूप में विकसित हुआ, जिसका मूल उद्देश्य समाज के सबसे वंचित एवं कमजोर वर्ग के उत्थान को प्राथमिकता देना है।

वर्तमान समय में समावेशी विकास, ग्रामीण विकास, कौशल विकास, स्थानीय उत्पादन, स्वरोज़गार तथा आत्मनिर्भरता जैसी नीतियों में एकात्म मानववाद के अनेक तत्व परिलक्षित होते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कुटीर एवं लघु उद्योगों, सहकारिता तथा स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास की अवधारणा आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह दृष्टिकोण न केवल आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देता है, बल्कि सामाजिक समरसता और क्षेत्रीय संतुलन को भी सुदृढ़ करता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी एकात्म मानववाद महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति प्रकृति को पूजनीय मानती है और मनुष्य तथा प्रकृति के मध्य संतुलन पर बल देती है। उपाध्याय ने भी विकास की ऐसी प्रक्रिया का समर्थन किया जो प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, पर्यावरण संरक्षण तथा भावी पीढ़ियों के हितों को ध्यान में रखे। आज सतत विकास के वैश्विक विमर्श में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है।

सामाजिक दृष्टि से एकात्म मानववाद जाति, वर्ग, भाषा और क्षेत्रीय विभाजनों से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक समन्वय का संदेश देता है। यह दर्शन समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान सम्मान प्रदान करते हुए सहयोग, कर्तव्यबोध और नैतिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने पर बल देता है।

परिणाम एवं चर्चा :-

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

१. **एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति पर आधारित मौलिक दर्शन है,** जिसका उद्देश्य मानव जीवन के सभी आयामों का संतुलित विकास करना है।
२. **यह दर्शन पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों का संतुलित विकल्प प्रस्तुत करता है।** जहाँ पूँजीवाद व्यक्ति-केंद्रित तथा साम्यवाद राज्य-केंद्रित व्यवस्था का समर्थन करता है, वहीं एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के मध्य संतुलन स्थापित करता है।
३. **उपाध्याय का विकास-दर्शन समावेशी एवं नैतिक है।** इसमें आर्थिक प्रगति को सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक मूल्यों तथा नैतिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा गया है।
४. **अंत्योदय की अवधारणा सामाजिक कल्याण की आधारशिला है।** समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास के लाभ पहुँचाने की भावना आज भी लोककल्याणकारी शासन की मूल प्रेरणा मानी जाती है।
५. **चिति एवं विराट की अवधारणाएँ राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करती हैं।** इन अवधारणाओं के माध्यम से उपाध्याय ने यह स्थापित किया कि राष्ट्र केवल राजनीतिक संगठन नहीं, बल्कि साझा सांस्कृतिक चेतना से निर्मित एक जीवंत इकाई है।
६. **समकालीन भारत की अनेक विकास नीतियों में एकात्म मानववाद के तत्व परिलक्षित होते हैं।** विशेष रूप से ग्रामोन्मुख विकास, स्थानीय उत्पादन, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समावेशन तथा पर्यावरणीय संतुलन जैसे क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता स्पष्ट दिखाई देती है।
७. अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि एकात्म मानववाद केवल वैचारिक दर्शन नहीं, बल्कि शासन, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, समाज तथा संस्कृति के लिए एक समग्र नीति-दृष्टि प्रदान करता है।

निष्कर्ष :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद आधुनिक भारत के राजनीतिक एवं दार्शनिक चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह दर्शन भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों तथा समग्र मानव विकास की अवधारणा पर आधारित है। उपाध्याय ने स्पष्ट किया कि किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी सांस्कृतिक आत्मा, सामाजिक संरचना तथा ऐतिहासिक अनुभवों के अनुरूप होना चाहिए। विदेशी विचारधाराओं का अंधानुकरण स्थायी विकास का आधार नहीं बन सकता।

एकात्म मानववाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करता है। यह मनुष्य को केवल आर्थिक साधन या उपभोक्ता नहीं मानता, बल्कि उसे नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना से युक्त पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करता है। इसी कारण यह दर्शन विकास को केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रखकर सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन तथा मानव कल्याण से जोड़ता है।

समकालीन भारत में आत्मनिर्भरता, समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, ग्रामोन्मुख अर्थव्यवस्था तथा सतत विकास जैसे विषयों के संदर्भ में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ रही है। यद्यपि समय और परिस्थितियों के अनुसार इसकी कुछ अवधारणाओं की पुनर्व्याख्या एवं व्यावहारिक परीक्षण आवश्यक है, तथापि इसके मूल सिद्धांत आज भी भारतीय विकास-दृष्टि के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति पर आधारित समग्र मानव विकास का ऐसा दर्शन है, जो वर्तमान एवं भविष्य दोनों के लिए एक संतुलित, नैतिक तथा मानवीय विकास मॉडल प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची:-

१. उपाध्याय, दीनदयाल. (1965). एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।
२. उपाध्याय, दीनदयाल. (2006). राष्ट्र चिंतन. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
३. उपाध्याय, दीनदयाल. (2002). पॉलिटिकल डायरी (हिंदी संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।
४. उपाध्याय, दीनदयाल. (विभिन्न संस्करण). दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय (15 खंड). नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
५. शर्मा, महेश चंद्र (संपा.). (2007). पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कर्तृत्व एवं विचार. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
६. भिषीकर, चंद्रशेखर परमानंद. (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय : व्यक्तित्व एवं जीवन-दर्शन. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।
७. वर्मा, वी. पी. (2009). आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
८. अवस्थी, ए. एवं अवस्थी, रामकुमार. (नवीन संस्करण). भारतीय राजनीतिक विचारक. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
९. भारतीय जनता पार्टी. (विभिन्न संस्करण). एकात्म मानव दर्शन. नई दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी केंद्रीय कार्यालय।
१०. संस्कृति विभाग, भारत सरकार. पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्मशती स्मारिका. नई दिल्ली: भारत सरकार।
११. भारत सरकार. आर्थिक सर्वेक्षण (**Economic Survey**). नई दिल्ली: वित्त मंत्रालय। (नवीनतम संस्करण)
१२. नीति आयोग. राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (**National Multidimensional Poverty Index**). नई दिल्ली: नीति आयोग। (नवीनतम संस्करण)
१३. उपाध्याय, दीनदयाल. भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।
१४. उपाध्याय, दीनदयाल. अखण्ड भारत : साध्य और साधन. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।
१५. उपाध्याय, दीनदयाल. राष्ट्र जीवन की दिशा. नई दिल्ली: लोकहित प्रकाशन (उपलब्ध संस्करण)।